भजन

तर्ज–ये माना मेरी जां मोहब्बत सजा है

फेर फेर देखा जो सहूर करके,
हक के बिना और कुछ भी नही है
आशिक भी तुम हो माशूक भी तुम,
तेरे इश्क बिना कुछ भी नही है

1–जिकर रूहो की पहले तुम ही करते,
अपने पिऊ मिलूं दिल मे तुम ही भरते
हुकम भी तुम हो हाकिम भी तुम,
तेरे इश्क बिना कुछ भी नही है

2–माशूक तेरा रुतबा बड़ा है,
मैने रब्द की मेरी खता है
करत करावत तुम ही सब प्रीतम,
हम तो हैं खाकीबुत कुछ भी नही

3–देके हुक्म खेल बनाया,
आप भुलाया प्रीतम आप ही जगाया
मोमिन के दिल को अर्श है कीन्हा,
तेरे इश्क बिन कुछ भी नही है